राजभाषा हिन्दी, मीडिया और वैश्वीकरण

सं. रोहिताश्व

अप्र

अकादमिक प्रतिभा

दिल्ली - 110059 (भारत)

(गोवा विश्वविद्यालय, गोवा द्वारा आयोजित सेमिनार प्रपत्र एवं अन्य सहयोगी आलेखों की पुस्तक 'राजभाषा हिंदी, मीडिया और वैश्वीकरण' के प्रकाशन हेतु– "द न्यू इंडिया एश्युरेंश कंपनी लिमिटेड, मुंबई से आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त")

राजभाषा हिन्दी और मीडिया वैश्वीकरण

© सं. रोहिताश्व

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलैक्ट्रानिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकापी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

आईएसबीएन : 978-93-80042-91-6

प्रकाशक : अकादमिक प्रतिभा
सरस्वती निवास, यू-9, नियर सोलंकी रोड,
सुभाष पार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष-011-25333263/64, 9811892244
ई-मेल : rkgpost@gmail.com
वेबसाईट : www.academicpratibha.com

मूल्य : 450/-

प्रथम संस्करण : 2013

शब्दांकन : सीनोग्रोफिक्स, न्यू मुल्तान नगर नई दिल्ली

मुद्रक : एच. एस. प्रिंटर्स, नई दिल्ली110002

Raj Bhasha Hindi, Media Aur Vaishvi Karan, Edited by **Rohitashva**

5. हिंदी की राजभाषा पत्रिकाएँ

इशरत खान

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में साहित्यकारों, अहिंदी भाषियों, समाज सुधारकों, नेताओं के साथ ही संचार माध्यमों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैसे तो इस क्षेत्र में रेडियो, दूरदर्शन, कंप्यूटर का उल्लेखनीय स्थान रहा है लेकिन मेरे विचार में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सरकारी और गैर सरकारी पत्र-पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संचार माध्यम का एक सशक्त माध्यम पत्रकारिता है। तकनीकी विकास में अन्य संचार माध्यमों को शक्तिशाली बताया गया है। अन्य माध्यम क्योंकि पूरी तरह व्यावसायिक है, इसलिए बाजारीकरण की आदत से लाचार है। ऐसे में सांस्कृतिक संकट की बात इलेक्ट्रानिक मीडिया के संदर्भ में आज की जा रही है। यह प्रश्न माँग और आपूर्ति का उतना नहीं है जितना सामाजिक स्तर पर पनपती जा रही संस्कारहीनता का है। इस संस्कारहीनता को उबारने का काम प्रिंट मीडिया ही कर सकता है। आज उसके समक्ष यह सबसे बड़ी चुनौती है। यह ललकार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से गूँज भी रही है। ''यह भय तो निराधार है कि छपी सामग्री का महत्व धीरे-धीरे कम हो जाएगा। पत्र-पत्रिकाओं को हाथ में लेना, अक्षर-अक्षर में ज्ञान-दृष्टि का मिलना और संवेदना से गुजरना और किसी भी माध्यम से संभव नहीं।''[1] राजभाषा का क्षेत्र इतना व्यापक और देश की कामकाजी मुख्यधारा से जुड़ा क्षेत्र है कि इसके तंत्र को विकसित करने में अनेक ग्रंथ राजभाषा विशेषज्ञों को लिखने पड़े। भोलानाथ तिवारी, रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, कैलाश भाटिया, रामस्वरूप चतुर्वेदी और हरिसिंह बंसल, दिलीप सिंह और रोहिताश्व आदि ने व्यावहारिक हिंदी के स्वरूप को उसके परिवेश में संप्रेषित बनाने के लिए काफी कुछ अपनी स्थापनाएँ दी हैं

किंतु यह उसका व्यावहारिक पक्ष था। एक बात साफ तौर पर देखी जा सकती है कि व्यावहारिक हिंदी की धारा में प्रयोजनमूलक और अनुवाद की हिंदी के बीच मानक हिंदी और कार्याविधिक क्षेत्र में इस प्रकार की हिंदी जो जनप्रचलित प्रवृति को विकसित करने के लिए मुख्य धारा वाली हो, इसका सृजन कोई नाम दिये बगैर सामने नहीं लाया जा सकता था। इस चुनौती की प्रख्यात राजभाषा चिन्तक एवं मर्मज्ञ डॉ. गोवर्धन ठाकुर ने स्वीकार किया और राजभाषा के इतिहास को एक नया आयाम पदान दिया?

इस समय देश में अनेक राजभाषा पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं एवं स्वायत्त निकायों से निकलने वाली अनेक पत्रिकाएँ हैं। इन पत्रिकाओं द्वारा राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार उच्च स्तर पर हो रहा है। इन पत्रिकाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) हिंदी की स्वैच्छिक/गैर सरकारी संस्थानों की पत्रिकाएँ

(2) हिंदी की सरकारी संस्थानों की पत्रिकाएँ। हिन्दी की स्वैच्छिक संस्थानों की पत्रिकाओं में दक्षिण-पश्चिमी भारत की कुछ प्रसिद्ध लघु पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। 'भारतवाणी', 'पूर्णकुंभ', 'राष्ट्रवाणी', 'हिंदी प्रचार वाणी', 'गोमांचल', 'साहित्य सेतु सागर', 'अनभै', 'विवरण पत्रिका' और 'राष्ट्रभाषा' आदि पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इन पत्रिकाओं के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

सरकारी पत्रिकाओं के अन्तर्गत अनेक उपक्रमों, सरकारी संगठनों और बैंकों द्वारा पत्रिकाओं का प्रकाशन जारी है। सरकारी पत्रिकाओं का उद्देश्य, आजकल मात्र कार्यालयीन जानकारी देकर पत्रिका की सामग्री को सीमित कर देना ही नहीं है अपितु विविधता प्रदान कर सामग्री को पठनीय बनाना भी है। गोवर्धन ठाकुर ने राजभाषा-क्षेत्र को उर्वर बनाने के लिए, अपने चिंतनशील मिजाज के फलस्वरूप उसे ऐसे आयाम प्रदान किये हैं जिसके कारण राजभाषा पत्रकारिता के संस्थापकों में आपको याद किया जाता रहेगा।

हिंदी की सरकारी संस्थानों की पत्रिकाओं में आजकल, इंद्रप्रस्थ भारती, इस्पात, भाषा भारती, उत्तर प्रदेश खनन भारती, गगनांचल, गवेषणा, ज्ञान गरिमा सिंधु, भाषा, मधुमती, अवंती, राजभाषा भारती, विज्ञान गरिमा, सिंधु और

उल्लेखनीय हैं। प्रसंगवश यहाँ कुछ प्रमुख राजभाषा पत्रिकाओं पर विचार किया जा रहा है।

केन्द्रीय सरकारी की राजभाषा हिंदी से संबंधित 'राजभाषा भारती' एक महत्वपूर्ण पत्रिका है। इसमें आलेख के अतिरिक्त संविधान में, समय-समय पर हिंदी संबंधी आदेश, केंद्रीय स्तर पर आयोजित हिंदी कार्यशालाओं, हिंदी दिवस समारोहों, समिति-समाचार, सम्मेलन/संगोष्ठी और विविध शीर्षक के अन्तर्गत हिंदी सेवियों का परिचय भी दिया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण, पुरस्कार और समाचार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी जाती है।

इस पत्रिका में राजभाषा हिंदी संबंधी अनेकानेक महत्वपूर्ण जानकारी के अलावा पत्रकारिता, संचार माध्यम तथा साहित्यकारों से संबंधित आलेख भी प्रकाशित होते रहते हैं यह सभी आलेख महत्वपूर्ण जानकारी से भरपूर होते हैं। उदाहरण के तौर पर इस पत्रिका (वर्ष 2005) में, मुंशी प्रेमचंद जी की 125वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में दो शोधपूर्ण आलेख प्रकाशित हुए हैं।[2] आशा है राजभाषा हिंदी एवं अन्य विविध विषयों से संबंधित सामग्री देने में 'राजभाषा भारती' और रोचक बनेगी।

दूसरी महत्वपूर्ण राजभाषा पत्रिका, इंडियन एयर लाइन्स द्वारा प्रकाशित, 'विमानिका' है। राजभाषा पत्रिकाओं में, यह पत्रिका चर्चित रही है। विमानिका का संपादक मंडल इस प्रकार है-अशोक भूषण, ए.के. वशिष्ठ, मेखला दत्ता, संजय शर्मा, समीर भट्टाचार्य, शैल जैन, हैदराबाद से अविनाश दास।[3]

इसमें राजभाषा हिंदी के अतिरिक्त अन्य विषयों से संबंधित लेख भी छपते हैं जैसे 'विचारधारा' शीर्षक के अन्तर्गत लालकृष्ण आडवाणी के विचार प्रकाशित हुए जिसमें वे कहते हैं-''सक्रिय राजनीति में आने से पहले मैं पत्रकार था, आज भी अमर राजनीति में न होता तो पत्रकार बनना ही पसंद करता।''[4] इसके अतिरिक्त ग्लेबलाइजेशन के दौर में हिंदी आलेख में विश्व स्तर पर हिंदी के महत्व को रेखांकित किया है।

सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन के लिए इस पत्रिका को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिंदी द्वारा पिछले दो वर्षों से लगातार प्रथम पुरुस्कार से सम्मानित किया गया है। इन्डियन एयर लाइन्स के भूतपूर्व अध्यक्ष सुनील अरोडा, 'विमानिका' के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं-''विमानिका'' ने राजभाषा हिंदी को पत्रिका की सम्पूर्णता से जोड़ते हुए उसे वैचारिक,

मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं सूचनापूरक अभिव्यक्ति के भाषिक सम्प्रेषण के माध्यम रूप में प्रतिष्ठित करने का सशक्त प्रयास किया है। इसमें हिंदी प्रचार एवं प्रसार के तथाकथित उत्सव, धर्म, रूप के स्थान पर एक आंतरिक धारा के रूप में प्रवाहित है।[5] इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'स्वागत' और 'विमानिका' पत्रिकाएँ राजभाषा हिन्दी की उच्च स्तरीय पत्रिकाएँ हैं।

'विज्ञान गरिमा सिंधु' पत्रिका के अन्तर्गत हिंदी में विज्ञान विषयक लेखन को बढ़ावा देने, जटिल विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत करने तथा पारिभाषिक शब्दावली द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग सुनिश्चित करने की दृष्टि से इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस पत्रिका में विविध स्तंभ के अन्तर्गत शब्दावली चर्चा, शब्द-भंडार, परिभाषा निदर्श, पुस्तक समीक्षा, आयोग की गतिविधियों तथा आयोग के प्रकाशन की जानकारी भी दी जाती है।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, कर्नाटक शाखा धारवाड से 'भारतवाणी' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इस पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 'भारतवाणी' की एक उपलब्धि रही है-'हिंदी-दिवस' विशेषांक। यह पत्रिका प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में 'हिंदी-दिवस' विशेषांक। यह पत्रिका प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में 'हिंदी दिवस' विशेषांक निकालती है। इस दृष्टि से सितंबर 1999, 2000, 2003, और 2004 में 'हिंदी-दिवस : आचरण की पचासवीं वर्षगांठ' में हिंदी दिवस की सार्थकता एवं उपादेयता (डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय), 'राष्ट्रभाषा या राजभाषा : हिंदी भ्रमक स्थिति' (श्रीमती सुधारानी श्रीवास्तव) आदि महत्वपूर्ण आलेख प्रकाशित हुए। इन आलेखों में, संविधान में हिंदी-संघर्ष को गहराई और सूक्ष्मता से विवेचित किया गया है। इसी के साथ इसमें राजभाषा हिंदी से संबंधित अनेक ज्ञानवर्धक एवं नई-नई जानकारी से परिपूर्ण आलेख प्रकाशित होते रहते हैं। इन विशेषांकों के अतिरिक्त, इसके प्रत्येक अंक में राजभाषा हिंदी से संबंधित सामग्री अवश्य होती है। इस पत्रिका की एक अन्य उपलब्धि यह है कि इसमें अध्यापकों, अध्यापिकाओं एवं शोधार्थियों के आलेख प्रकाशित कर उन्हें हिंदी-लेखन और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कुल मिलाकर पाठकों के मध्य यह लोकप्रिय पत्रिका रही है।

'गोमांचल' पत्रिका, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से, गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ,

मडगाँव, गोवा से प्रकाशित होती है। यह गोवा की राजभाषा प्रचार-प्रसार की प्रमुख पत्रिका रही है। इस पत्रिका के हिंदी-दिवस विशेषांकों की भी एक गौरवपूर्ण परंपरा रही है। इसमें राजभाषा हिंदी की सभी गतिविधियों का परिचय दिया जाता है। 'हिंदी दिवस' 14 सितम्बर : 14 बातें' शीर्षक की कुछ बातें राजभाषा से जुड़ी हुई हैं जो इस प्रकार हैं....

(1) सर्वोच्च सत्ता प्राप्त भारतीय संसद ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन किया है। अब यह अखिल भारत की जनता का निर्णय है।

(2) प्रान्तों में प्रांतीय भाषाएँ जनता तथा सरकारी कार्य का माध्यम होगी, लेकिन केंद्रीय और अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिंदी में ही कार्य होना आवश्यक है।

इसी के साथ हिंदी दिवस के अनुसार पर राष्ट्रीय सम्मान के 'प्रतिज्ञा'. .....भी राजभाषा हिंदी प्रेम को दर्शाती है। हिंदी-दिवस के दिन हम प्रतिज्ञा करें कि राष्ट्रभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि का प्रचार कर, राष्ट्रीय-भावना को हम सुदृढ़ करेंगे। संप्रति संपादक मोहनदास सुर्लकर के कुशल संपादन में, 'गोमांचल' में अनेक स्तरीय लेख भी समय-समय प्रकाशित होते रहते हैं।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि राजभाषा के विकास में, सरकारी एवं गैर सरकारी पत्रिकाओं का योगदान था, है और रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. दिलीप सिंह: भारतीय भाषा पत्रकारिता। एक अवलोकन, पृ. 10।
2. (1) राजेंद्र प्रताप सिंह : राजभाषा, राष्ट्रभाषा और मुंशी प्रेमचंद, पृ. 1।
   (2) अनिल पतंग : प्रेमचंद द्वारा अनूदित नाटक पृ. 11
   (स) : राजभाषा भारती वर्ष 28 अंक 109 अप्रैल-जून 2005
3. शशिनारायण स्वाधीन: राजभाषा हिंदी' समस्याएँ और समाधान, पृ. 153।
4. शशि नारायण स्वाधीन : राजभाषा हिंदी : समाधान पृ. 154
5. वही, : राजभाषा हिंदी : समाधान पृ. 148
6. (संपादक) : विज्ञान गरिमा सिंधु : वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली